भाग - दो

भाषा-ज्ञान

लिंग

1. पुंलिंग - ऐसे शब्द जिनसे पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुंलिंग कहते हैं ।
   जैसे - अध्यापक, केला, लड़का, युवक, शेर, घोड़ा

2. स्त्रीलिंग - वे शब्द जिनसे स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं।
   जैसे - पुस्तक, साड़ी, कमीज, स्त्री, लड़की, गाय ।

लिंग परिवर्तन के कुछ नियम

पुंलिंग शब्द से स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए उदाहरण के साथ कुछ नियम नीचे दिए गए हैं ।

1. पुंलिंग शब्दों के अंत में आए 'अ' और 'आ' के स्थान पर 'ई' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
कबूतर	-	कबूतरी	देव	-	देवी
दास	-	दासी	घोड़ा	-	घोड़ी
दादा	-	दादी	भतीजा	-	भतीजी
लड़का	-	लड़की	नाना	-	नानी
चाचा	-	चाची	मामा	-	मामी
बेटा	-	बेटी	हिरन	-	हिरनी
ब्राह्मण	-	ब्राह्मणी	मकड़ा	-	मकड़ी
गोप	-	गोपी			

2. अंत में आये 'अ' और 'आ' के स्थान पर 'इया' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
चूहा	-	चुहिया	लोटा	-	लुटिया
बेटा	-	बिटिया	खाट	-	खटिया
गुड्डा	-	गुड़िया	कुत्ता	-	कुतिया
डिब्बा	-	डिबिया	बूढ़ा	-	बुढ़िया
नद	-	नदिया			

3. शब्दों के अंत में आए 'अ', 'आ' और 'ई' के स्थान पर 'इन' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
सुनार	-	सुनारिन	लुहार	-	लुहारिन
कुम्हार	-	कुम्हारिन	सपेरा	-	सपेरिन
मालिक	-	मालकिन	तेली	-	तेलिन
धोबी	-	धोबिन	माली	-	मालिन
नाग	-	नागिन	कहार	-	कहारिन

4. अंत में आए 'अ', 'आ' और उ,ऊ,ए के स्थान पर 'आइन' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
लाला	-	ललाइन	दूबे	-	दुबाइन
गुरु	-	गुरुआइन	ठाकुर	-	ठकुराइन
चौबे	-	चौबाइन	पंडित	-	पंडिताइन
बाबू	-	बबुआइन	बनिया	-	बनियाइन

5. अकारांत शब्दों के अंत में 'नी' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
जाट	-	जाटनी	ऊँट	-	ऊँटनी
रीछ	-	रीछनी	भाट	-	भाटनी
मोर	-	मोरनी	भील	-	भीलनी
सिंह	-	सिंहनी	शेर	-	शेरनी

6. अंत में 'आ' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
अध्यक्ष	-	अध्यक्षा	छात्र	-	छात्रा
अनुज	-	अनुजा	महोदय	-	महोदया
शिष्य	-	शिष्या	प्रिय	-	प्रिया
आत्मज	-	आत्मजा	आचार्य	-	आचार्या

7. अंत में 'आनी' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
सेठ	-	सेठानी	जेठ	-	जेठानी
नौकर	-	नौकरानी	भव	-	भवानी
देवर	-	देवरानी	मेहतर	-	मेहतरानी

8. अंत में आए 'अक' के स्थान पर 'इका' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
लेखक	-	लेखिका	गायक	-	गायिका
सेवक	-	सेविका	पाठक	-	पाठिका
बालक	-	बालिका	नायक	-	नायिका
अध्यापक	-	अध्यापिका	पाचक	-	पाचिका

9. अंत में आए 'मान', और 'वान' के स्थान पर 'मती' और 'वती' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
सत्यवान	-	सत्यवती	पुत्रवान	-	पुत्रवती
ज्ञानवान	-	ज्ञानवती	धनवान	-	धनवती
शक्तिमान	-	शक्तिमती	बुद्धिमान	-	बुद्धिमती
रूपवान	-	रूपवती	गुणवान	-	गुणवती

10. अंत में आए 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर :-

पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग	पुंलिंग	-	स्त्रीलिंग
दाता	-	दात्री	नेता	-	नेत्री
कर्त्ता	-	कर्त्री	निर्माता	-	निर्मात्री

11. सदा पुंलिंग रहने वाले शब्दों से पहले 'मादा' लगाकर :-

पुंलिंग	-	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	-	**स्त्रीलिंग**
खरगोश	-	मादा खरगोश	कौआ	-	मादा कौआ
भेड़िया	-	मादा भेड़िया	उल्लू	-	मादा उल्लू
चीता	-	मादा चीता	तोता	-	मादा तोता

12. सदा स्त्रीलिंग रहने वाले शब्दों से पहले 'नर' लगाकर :-

पुंलिंग	-	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	-	**स्त्रीलिंग**
नर कोयल	-	कोयल	नर मछली	-	मछली
नर बतख	-	बतख	नर चील	-	चील
नर लोमड़ी	-	लोमड़ी	नर मक्खी	-	मक्खी

13. भिन्न रूप वाले पुंलिंग - स्त्रीलिंग शब्द

पुंलिंग	-	**स्त्रीलिंग**	**पुंलिंग**	-	**स्त्रीलिंग**
राजा	-	रानी	पुरुष	-	स्त्री
पति	-	पत्नी	पिता	-	माता
नर	-	नारी	युवक	-	युवती

•

क्रिया

क्रिया की परिभाषा :

जिस शब्द या पद से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं । जैसे - उड़ना, दौड़ना, पीना, पढ़ना, हँसना आदि ।

1. चिड़िया उड़ रही है ।
2. मोहन दौड़ता है ।
3. विनोद दूध अवश्य पीता है ।

ये सभी पद (उड़, दौड़ता, पीता) किसी न किसी कार्य के करने के सूचक हैं । अत: ये क्रिया पद हैं । क्रिया के मूलरूप को 'धातु कहते हैं । पढ़, उठ, खा, पी आदि धातुएँ हैं ।

क्रिया के भेद

मुख्य रूप से क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं - सकर्मक और अकर्मक ।

1. **अकर्मक क्रिया** - जिन क्रियाओं के साथ उनका कर्म नहीं होता, वे अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं । अकर्मक क्रिया का प्रभाव सीधे कर्त्ता पर पड़ता है । जैसे - श्याम दौड़ता है ।

   इस उदाहरण में 'दौड़ना' क्रिया का फल सीधे कर्त्ता श्याम पर पड़ रहा है । इस वाक्य में कोई कर्म नहीं है । न ही उसकी आवश्यकता है ।

   अन्य उदाहरण -

   (i) पक्षी उड़ रहे हैं ।

   (ii) बच्चे हँस रहे हैं ।

   (iii) सीता मुस्कराती है ।

   (iv) अतिथि जाग गया है ।

   (v) मेहमान जा चुके हैं ।

2. **सकर्मक क्रिया** - जिस क्रिया के प्रयोग में 'कर्म' की आवश्यक्रता पड़ती है और उसका सीधा प्रभाव कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे -

   'सुरेश पुस्तक पढ़ता है' । यहाँ 'पढ़ना' क्रिया के प्रयोग में 'कर्म' (पुस्तक) की आवश्यकता अनिवार्य रूप से पड़ रही है ।

अन्य उदाहरण -

(i) शीला ने संतरा खाया ।

(ii) मोहन दूध पी रहा है ।

(iii) मैंने उपन्यास पढ़ा ।

3. **प्रेरणार्थक क्रिया** - जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्त्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे 'प्रेरणार्थक क्रियाएँ' कहलाती हैं ।

जैसे - काटना से कटवाना, करना से कराना ।

उदाहरण - मोहन मुझसे किताब लिखाता है ।

इस वाक्य में मोहन (कर्त्ता) स्वयं किताब न लिखकर 'मुझे' अर्थात् दूसरे व्यक्ति को लिखने की प्रेरणा देता है ।

4. **संयुक्त क्रिया** - जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं ।

जैसे - श्याम रो चुका ।

किशोर रोने लगा ।

राम घर पहुँच गया ।

इन वाक्यों में 'रो चुका', 'रोने लगा', 'पहुँच गया' क्रमशः संयुक्त क्रियाएँ हैं ।

निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त क्रियाओं के भेद बताइए -

(i) मीरा सेब खाती है ।

(ii) बच्चा रोता है ।

(iii) मोहन नहाता है ।

(iv) मुकेश फुटबॉल खेलता है ।

(v) लड़का जमीन पर बैठ चुका है ।

(vi) लोग रामायण पढ़ते हैं ।

(vii) नौकरानी कपड़े धोती है ।

(viii) तुलसीदास ने रामचरितमानस नामक ग्रंथ लिखा ।

(ix) मोहन किताब पढ़ रहा है ।

(ix) रमा नहाती है ।

•

अव्यय

अव्यय की परिभाषा - 'अव्यय' ऐसे शब्दों को कहते हैं, जिनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष, कारक इत्यादि के कारण कोई विकार उत्पन्न नहीं होता । ऐसे शब्द अपने मूल रूप में ही सर्वत्र प्रयुक्त होते हैं । इनका व्यय नहीं होता । अत: ये अव्यय हैं । जैसे- जब, तब, अभी, उधर, वहाँ, इधर, कब, तथा, एवं, किन्तु, वाह, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अर्थात्, चूंकि, आह, अरे, और, ठीक, अत: इत्यादि ।

अव्यव या अविकारी शब्द मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं -

1. क्रिया विशेषण अव्यय

2. सम्बन्धसूचक अव्यय

3. समुच्चयबोधक अव्यय

4. विस्मयादिबोधक अव्यय ।

1. **क्रिया विशेषण** - जो अव्यय या अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं ।

जैसे - सोहन धीरे धीरे चल रहा है ।

यहाँ धीरे धीरे द्वारा 'चलना' क्रिया की विशेषता प्रकट हो रही है । अत: यह क्रिया विशेषण है ।

कुछ अन्य उदाहरण :

(i) राम बिल्कुल थक गया है ।

(ii) वह प्रतिदिन पढ़ता है ।

(iii) सोहन मीठा बोलता है ।

क्रिया विशेषण अव्यय के निम्नलिखित चार भेद हैं -

(i) कालवाचक क्रिया विशेषण

(ii) स्थानवाचक क्रिया विशेषण

(iii) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(iv) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

(i) **कालवाचक क्रिया विशेषण** - जिन शब्दों से क्रिया के होने या करने का समय सूचित हो वे कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं ।

जैसे- वह अभी-अभी स्कूल गया है ।

यहाँ 'अभी-अभी' 'गया' क्रिया के समय को सूचित कर रहा है ।

कुछ अन्य उदाहरण -

(i) सदा सत्य बोलो ।

(ii) मैं अभी तुम्हारे पास आऊँगा ।

(iii) जब-तब मत घूमो ।

(iv) कृपया कल वहाँ चले जाओ ।

(ii) **स्थानवाचक क्रिया विशेषण** - जो क्रिया विशेषण क्रिया के स्थान या दिशा का बोध कराते हैं, वे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं । जैसे-

(i) तुम किधर जाना चाहते हो ?

(ii) वह अंदर बैठा है ।

(iii) दादा जी बाहर गए हैं ।

(iv) इधर-उधर मत जाओ ।

(v) बायीं ओर भीड़ है ।

यहाँ किधर, अंदर, बाहर, इधर - उधर, बायीं क्रमश: क्रिया के स्थान और दिशा का बोध करा रहे हैं ।

(iii) **रीतिवाचक क्रिया विशेषण** - जो क्रिया विशेषण क्रिया के होने की रीति या विधि का बोध कराते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं ।

जैसे - राकेश मधुर गाता है ।

यहाँ 'मधुर' क्रिया विशेषण गाने की रीति का बोध करा रहा है ।

अन्य उदाहरण :

(i) राम तेजी से दौड़ा ।

(ii) अब वह भलीभाँति नाच लेता है ।

(iii) मैं ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ ।

(iv) **परिमाणवाचक क्रिया विशेषण** - परिमाणवाचक क्रिया विशेषण क्रिया की मात्रा या उसके परिमाण का बोध कराता है । यह बताता है कि क्रिया कितनी मात्रा में हुई । जैसे -

(i) वह बिल्कुल थक गया ।

(ii) वह बहुत थक गया ।

(iii) वह थोड़ा खाता है ।

(iv) मैं जरा ही चला था कि रिक्शा आ गया ।

(v) जरा ज्यादा / कम बोलो ।

यहाँ बिल्कुल, बहुत, थोड़ा, जरा, ज्यादा, कम क्रिया की मात्रा का बोध करा रहे हैं ।

2. **संबंध सूचक अव्यय** - जो अव्यय शब्द संज्ञा, सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर वाक्य के दूसरे शब्दों से उनका संबंध बताते है, उन्हें संबंध सूचक अव्यय कहते हैं । जैसे-

राम घर के बाहर गया ।

धन के बिना किसी का काम नहीं चलता ।

श्याम राम के साथ अपने घर जाएगा ।

इन वक्यों में 'के बाहर', 'के बिना', 'के साथ' शब्द संबंध सूचक अव्यय हैं ।

3. **समुच्चयबोधक अव्यय** - दो पदों, पदबंधों वाक्यांशो अथवा वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं । जैसे- और, किन्तु, कि, या । इन्हें योजक भी कहा जाता है ।

उदाहरण : (i) ''वह न चाय पीता है और न कॉफी ।

(ii) मैं अशोक हूँ न कि अमर ।

(iii) पढ़ाई करो अन्यथा फेल हो जाओगे ।

इन वाक्यों में 'ओर', 'न कि', 'अन्यथा' समुच्चयबोधक अव्यय हैं ।

4. **विस्मयादिबोधक अव्यय** - हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, व्यथा आदि भावों को प्रकट करने वाले अविकारी शब्द विस्मयादि बोधक अव्यय कहलाते हैं । जैसे -

(i) वाह ! क्या सुन्दर दृश्य है !

(ii) अरे ! गाड़ी से बचो ।

(iii) वाह ! क्या सुन्दर बगीचा है !

(iv) शाबाश ! तुमसे ऐसी ही आशा थी ।

इन वाक्यों में 'वाह', 'अरे', 'शाबाश' विस्मयादिबोधक अव्यय हैं ।

•

पर्यायवाची शब्द

परिभाषा - समान अर्थ के बोधक शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं । अथवा एक ही शब्द के उसी के समान अर्थ रखने वाले शब्दों को पर्याववाची शब्द कहा जाता है ।

प्रस्तुत है हिन्दी के प्रमुख पर्यायवाची शब्द :

शब्द	-	**पर्यायवाची**
अंग	-	अवयव, तन, गात, हिस्सा ।
अवनति	-	गिरावट, पतन, अधोगति ।
अग्नि	-	आग, अनल, पावक, ज्वाला, वह्नि।
अमृत	-	पीयूष, सुधा, अमिय, सोम ।
असुर	-	राक्षस, दानव, दैत्य, निशाचर ।
अनुचर	-	दास, सेवक, चाकर, भृत्य ।
आकाश	-	व्योम, गगन, नभ, आसमान ।
आँख	-	नेत्र, नयन, लोचन, दृग ।
आनन्द	-	मोद, प्रमोद, उल्लास, हर्ष ।
आख्यान	-	कथा, कहानी, किस्सा, वर्णन ।
इच्छा	-	अभिलाषा, आशा, मनोरथ, चाह ।
ईश्वर	-	ईश, प्रभु, जगदीश, परमात्मा ।
उपवन	-	उद्यान, वाटिका, बगीचा, फुलवाड़ी ।
कमल	-	जलज, सरोज, राजीव, पंकज ।
कपड़ा	-	वस्त्र, वसन, चीर, पट ।
गंगा	-	भागीरथी, सुरसरी, सुरनदी, त्रिपथगा ।
गृह	-	भवन, आलय, निकेतन, सदन ।
चतुर	-	प्रवीण, चालाक, कुशल, निपुण ।
तालाब	-	सर, तालाब, सरोवर, जलाशय ।
देव	-	देवता, अमर, सुर, निर्जर ।
दास	-	सेवक, अनुचर, चाकर, नौकर ।
दिन	-	दिवस, बासर, वार अह्न।
दुःख	-	कष्ट, पीड़ा, क्लेश, व्यथा ।

धरती - पृथ्वी, भूमि, मही, वसुधा ।

नदी - सरिता, प्रवाहिनी, तटिनी, सलिला ।

निर्धन - दरिद्र, गरीब, रंक, कंगाल ।

पक्षी - खग, विहग, चिड़िया, पंछी ।

पृथ्वी - भू, धरा, जमीन, धरती, मही ।

पुष्प - सुमन, कुसुम, फूल, प्रसून ।

पर्वत - गिरि, अचल, शैल, नग ।

प्रकाश - उजाला, प्रभा, ज्योति, चमक, आलोक ।

पेड़ - वृक्ष, तरु, द्रुम, पादप ।

बंदर - कपि, वानर, हरि, मर्कट ।

ब्रह्मा - विधि, विधाता, कमलासन ।

भ्रमर - अलि, मधुप, मधुकर, भौंरा ।

मनुष्य - मनुज, नर, मानव, आदमी ।

माता - जननी, जन्मदायिनी, अम्बा, माँ ।

राजा - नृप, नरपति, महीपति, नरेश ।

राम - रघुनाथ, राघव, सीतापति, रघुपति, दशरथ-सुत

वायु - हवा, वात, अनिल, समीर, पवन ।

वर्षा - बारिश, मेह, पावस ।

विष्णु - हरि, गोविन्द, लक्ष्मीपति, नारायण ।

सूर्य - रवि, भानु, सविता, आदित्य, तपन, दिवाकर ।

संसार - जग, जगत, भव, भुवन, दुनिया ।

सर्प - सांप, भुजंग, अहि, नाग, व्याल ।

स्वर्ण - हेम, कनक, सोना, कुन्दन ।

मदिरा - सुरा, सोमरस, मधु, शराब ।

सरस्वती - वाणी, शारदा, भारती, हंसवाहिनी, वाग्देवी ।

हाथ - कर, हस्त, पाणि ।

हाथी - द्विप, गज, करी, नाग, मतंग ।

अनेकार्थी शब्द

प्रत्येक भाषा में अनेक शब्द ऐसे होते हैं जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं । वे शब्द प्रसंग बदलने पर अलग-अलग अर्थ देते हैं । जैसे-

'कल' शब्द के अर्थ हैं- पिछला दिन, अगला दिन, चैन, शोर, मशीन आदि ।

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले कुछ अनेकार्थी शब्द निम्नलिखित हैं-

अंक - संख्या, गोद, अध्याय, चिह्न, नाटक का अंक ।

अंबर - आकाश, वस्त्र, कपास ।

अक्षर - नष्ट न होने वाला, ईश्वर, वर्ण ।

अनंत - ईश्वर, आकाश, विष्णु, शेषनाग, अविनाशी ।

अब्ज - शंख, कमल, कपूर, चंद्रमा ।

अरुण - सूर्य का सारथी, प्रात:कालीन सूर्य, सिंदूर, लाल ।

अर्थ - धन, व्याख्या, उद्देश्य ।

आम - एक फल, सामान्य ।

आराम - सुख-चैन, बगीचा ।

उत्तर - जवाब, उत्तर दिशा ।

उपचार - उपाय, सेवा, इलाज ।

कनक - सोना, धतूरा, गेहूँ ।

कर - हाथ, किरण, हाथी का सूँड, टैक्स, 'करना' क्रिया का आज्ञार्थक रूप, मूलधातु ।

कल - चैन, बीता हुआ कल, आनेवाला दिन, मशीन, आराम ।

कला - एक विषय, गुण, युक्ति, तरीका ।

काम - इच्छा, कामदेव, कार्य, वासना ।

काल - समय, मृत्यु ।

कुल - सब, वंश, घर, गोत्र ।

कृष्ण - काला, श्रीकृष्ण, पंद्रह दिनों का अंधेरा पक्ष।

खग - पक्षी, आकाश ।

गुरु - श्रेष्ठ, भारी, बड़ा, दो मात्राओंवाला वर्ण, कठिनता से पचने वाला, शिक्षक ।

ग्रहण - लेना, सूर्य-चन्द्र ग्रहण, दोष ।

घर - मकान, कुल, कार्यालय ।

जड़ - अचेतन, मूर्ख, वृक्ष का मूल ।

जवान - सैनिक, योद्धा, वीर, युवक ।

जान - प्राण, पहचान, ज्ञान ।

ठाकुर - देवता, स्वामी, क्षत्रिय, ईश्वर ।

तप - साधना, गर्मी, अग्नि, धूप ।

तारा - नक्षत्र, आँखों की पुतली ।

तीर - किनारा, वाण ।

दंड - डंडा, सज़ा, व्यायाम का प्रकार, डंठल ।

दल - समूह, सेना, पत्ता ।

धारणा - विचार, बुद्धि, समझ, विश्वास, मन की स्थिरता ।

नायक - नेता, मार्गदर्शक, सेनापति, नाटक का मुख्य पात्र ।

पतंग - सूर्य, एक कीड़ा, उड़ाई जाने वाली एक गुड़िया ।

पत्र - चिट्ठी, पत्ता, समाचार पत्र, पन्ना ।

पद - चरण, शब्द, ओहदा, कविता की पंक्ति, दर्जा ।

पय - दूध, पानी, अमृत ।

पानी - जल, मान, चमक ।

पूर्व - पहले, एक दिशा का नाम ।

बाल - केश, बच्चा ।

भेद - प्रकार, रहस्य,फूट, मित्रता, तात्पर्य ।

मत - राय, संप्रदाय, निषेध ('न' के अर्थ में)

मधु - शहद, मदिरा, वसंत, मीठा ।

योग - जोड़, व्यायाम, मेल, ध्यान ।

रास - आनंद, नृत्य ।

लक्ष्य - उद्देश्य, निशाना ।

लाल - एक रंग, पुत्र ।

बंश - कुल, बाँस, जाति ।

वर्ण - रंग, अक्षर, जाति ।

वार - दिन, आक्रमण, प्रहार ।

विधि - ब्रह्मा, रीति, कानून ।

वृत्ति - पेशा, छात्रवृत्ति, कार्य, स्वभाव, नीयत ।

शेष - बचा हुआ, शेषनाग ।

श्यामा - राधा, यमुना, रात, कोयल ।

श्री - लक्ष्मी, सरस्वती, संपत्ति, शोभा, कांति, धन ।

सारंग - मोर, सांप, बादल, मृग, पपीहा, हंस, कोयल, कामदेव ।

साल - एक पेड़, वर्ष, दु:ख, कचोट ।

सूत - धागा, सारथी ।

सोना - शयन, स्वर्ण ।

हल - समाधान, खेत जोतने का यंत्र ।

हार - पराजय, माला ।

हाल - दशा, बड़ा कमरा ।

विलोम शब्द

''शब्द के वास्तविक अर्थ के विपरीत अर्थ का बोध करानेवाले शब्द को विलोम शब्द कहते हैं ।''

शब्द		विलोम शब्द
अकाम	-	सकाम
अधम	-	उत्तम
आदि	-	अंत
अमृत	-	विष
अस्त	-	उदय
अपना	-	पराया
अमर	-	मरणशील
आकाश	-	पाताल
आगे	-	पीछे
आशा	-	निराशा
इच्छा	-	अनिच्छा
उचित	-	अनुचित
उधार	-	नगद
कड़वा	-	मीठा
कठिन	-	सरल
आना	-	जाना
आय	-	व्यय
आलोक	-	अंधकार
उच्च	-	निम्न
उत्थान	-	पतन
कल	-	आज
कठोर	-	कोमल
गगन	-	धरा
गुण	-	दोष
गुरु	-	लघु
जल	-	थल
दक्षिण	-	वाम
क्रय	-	विक्रय

शब्द		विलोम शब्द
कुरूप	-	सुरूप
गरीब	-	अमीर
जवानी	-	बुढ़ापा
थोड़ा	-	बहुत
दिन	-	रात
नवीन	-	प्राचीन
नागरिक	-	ग्रामीण
आयात	-	निर्यात
सगुण	-	निर्गुण
संयोग	-	वियोग
आदर	-	निरादर
स्वप्न	-	जागरण
एक	-	अनेक
न्याय	-	अन्याय
व्यष्टि	-	समष्टि
स्वाधीन	-	पराधीन
इहलोक	-	परलोक
स्तुति	-	निंदा
यश	-	अपयश
सपूत	-	कपूत
कृपण	-	उदार
मालिक	-	नौकर
राजा	-	रंक
माता	-	पिता
साकार	-	निराकार
शत्रु	-	मित्र
सूक्ष्म	-	स्थूल

समानार्थक शब्द

कुछ शब्दों के अर्थ समान होते हैं, पर बिलकुल एक नहीं । अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से इनमें सूक्ष्म अन्तर रहता है । ऐसे शब्द समानार्थक कहे जाते हैं । इन्हें एकार्थक कहना उचित नहीं है ।

नीचे कुछ समानार्थक शब्द दिए जा रहे हैं । इन्हें पढ़ें और इनका प्रयोग सावधानी से करें ।

शब्द	समान अर्थ
अलौकिक :	जो इस लोक में न मिल सके ।
अस्वाभाविक :	जो मानव प्रकृति के विपरीत हो ।
अबला :	स्त्री जाति के अर्थ में ।
निर्बला :	बलहीन स्त्री ।
अहंकार :	शक्ति या योग्यता से अधिक समझना ।
घमण्ड :	अपने को बहुत बड़ा और दूसरों को कुछ नहीं समझना ।
अनभिज्ञ :	जिसे किसी बात की जानकारी की कमी हो ।
मूर्ख :	जो मोटी बुद्धि के कारण बहुत देर से समझे ।
मूढ़ :	जिसमें समझने की शक्ति न हो ।
अनुरूप :	स्वरूप या योग्यता के अनुसार ।
अनुकूल :	अपने पक्ष में ।
अनुभव :	व्यवहार, अभ्यास आदि से प्राप्त ज्ञान (अनुभव इन्द्रियों के माध्यम से होता है) ।
अनुभूति :	चिंतन और मनन से प्राप्त आंतरिक ज्ञान ।
अपराध :	सामाजिक या राजकीय नियम तोड़ना ।
पाप :	नैतिक और धार्मिक नियम तोड़ना ।
अपयश :	सदा के लिए दोषी बन जाना ।
अभिज्ञ :	अनेक विषयों का ज्ञाता ।
विज्ञ :	किसी खास विषय का अच्छा ज्ञाता ।
अधिक :	आवश्यकता से अधिक ।
काफी :	आवश्यकता से न अधिक न कम ।
अगोचर :	जो ज्ञान या बुद्धि से जाना जाय, इन्द्रियों से नहीं ।
अज्ञेय :	जो किसी प्रकार न जाना जाय ।
अद्वितीय :	जिसके समान दूसरा न हो ।

अनुपम :	जिसकी उपमा न हो ।
अस्त्र :	फेंककर प्रयोग किया जाने वाला । युद्धोपकरण : जैसे : बम, गोला ।
शस्त्र :	हाथ से पकड़कर चलाए जाने वाला हथियार, जैसे - तलवार ।
अमूल्य :	जिस वस्तु का मूल्य कोई दे ही न सके ।
बहुमूल्य :	जिस वस्तु का मूल्य अधिक परंतु उचित हो ।
आयु :	जन्म से मरण तक का समय ।
अवस्था :	जन्म से वर्तमान काल तक का समय ।
अर्पण :	अपने से बड़ों को कोई वस्तु भेंट करना ।
प्रदान :	बड़ों की ओर से छोटों को देना ।
इच्छा :	किसी विशेष वस्तु की साधारण इच्छा ।
अभिलाषा :	किसी विशेष वस्तु की हार्दिक इच्छा ।
कामना :	किसी विशेष वस्तु की सामान्य इच्छा ।
आरम्भ :	साधारण कार्य की प्रथम अवस्था ।
श्रीगणेश :	शुभ या धार्मिक कार्य की प्रथम अवस्था ।
आज्ञा :	बड़ों द्वारा किया गया कार्य निर्देश ।
आदेश :	किसी अधिकारी द्वारा किया गया कार्य निर्देश ।
अनुज :	केवल छोटा भाई ।
भाई :	छोटे-बड़े दोनों को कहा जाता है ।
प्रयास :	साधारण प्रयत्न ।
साहस :	साधन के अभाव में भी काम करने की तीव्र इच्छा ।
कष्ट :	शारीरिक या मानसिक कष्ट ।
क्लेश :	यह मन के अप्रिय भावों का सूचक है ।
पीड़ा :	रोग या चोट के कारण शारीरिक कष्ट ।
वेदना :	मानसिक कष्ट ।
लज्जा :	अनुचित काम करने हेतु मुँह छिपाना ।
संकोच :	कोई काम करने में हिचक ।
तट :	नदी, तालाब या समुद्र के निकट की जमीन ।
तीर :	जलाशय के जल को स्पर्श करने वाली जमीन ।
सैकत :	किनारे की बालूवाली जमीन ।

त्रुटि :	कमी या चूक का भाव ।
दोष :	अनुचित का भाव ।
भूल :	सब प्रकार की गलतियाँ ।
आधि :	मानसिक कष्ट ।
व्याधि:	शारीरिक कष्ट
ईर्ष्या :	दूसरों की सफलता पर मन में जलन ।
द्वेष :	दूसरे के प्रति घृणा और शत्रुता का भाव ।
प्रलाप :	बकवास, हायतोबा ।
विलाप :	दु:ख में रोना ।
पत्नी :	अपनी विवाहिता स्त्री ।
स्त्री :	स्त्री-जाति का बोधक ।
महिला :	कुलीन स्त्री ।
शंका :	सन्देह का भाव ।
आशंका :	अमंगल होने का भय ।
बाला :	सोलह वर्ष की लड़की ।
किशोरी :	दस से पन्द्रह वर्ष की लड़की ।
कन्या :	दस साल की कुमारी ।
सन्धि :	किसी राष्ट्र से सैनिक मेल, अक्षरों का मेल ।
मेल :	किसी व्यक्ति के साथ मिलना या दोस्ती करना ।
मौन :	बोलने की इच्छा न रखना ।
मूक :	जो बोल ही न सके ।
राजा :	जो देश विशेष का वंशगत अधिकारी हो ।
सम्राट :	राजाओं का राजा ।